Mahila college Dalmianagar
Department of History
B.A II (Hons)

Dr. Anu kumari
date - 21/2/2024

Topic -

पालवंश :

⇒ - पाल साम्राज्य मध्यकालीन उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली और महत्वपूर्ण साम्राज्य माना जाता है, जो कि 750-1174 ई० तक चला। पाल राजवंश ने भारत के पूर्वी भाग में एक विशाल साम्राज्य बनाया था। यह पूर्व - मध्यकालीन राजवंश था। जब हर्षवर्धन काल के बाद समस्त उत्तरी भारत में राजनीतिक, सामाजिक, एवं आर्थिक गहरा संकट उत्पन्न हो गया, तब बिहार, बंगाल और उड़ीसा के सम्पूर्ण क्षेत्र में पूरी तरह अराजकता फैली थी। पाल साम्राज्य की नींव 750 ई० में राजा गोपाल पाल ने डाली। बताया जाता है कि नींव 75० उस क्षेत्र में फैली अशांति को दबाने के लिए कुछ प्रमुख लोगों ने उसको राजा के रूप में चुना। इस प्रकार राजा का निर्वाचन एक अभूतपूर्व घटना थी। इसका अर्थ शायद यह है कि गोपाल उस क्षेत्र के सभी महत्वपूर्ण लोगों का समर्थन प्राप्त करने में सफल हो सका और

इससे उसे अपनी स्थिति मजबूत करने में काफी सहायता मिली। इस राज्य में वास्तु कला को बहुत बढ़ावा मिला। पाल राजाओं ने बौद्ध धर्म के उत्थान के लिए बहुत से काम किये जो कि इतिहास में अंकित है। पाल राजाओं ने हिन्दू धर्म के आगे बढ़ने के लिए कई मंदिरों का निर्माण कराया और शिक्षा के लिए विश्वविद्यालयों का निर्माण करवाया।

इतिहास :—

पाल वंश का सबसे बड़ा सम्राट गोपाल का पुत्र धर्मपाल था। इसने 770-810 ई० तक राज्य किया। कन्नौज के प्रभुत्व के लिए संघर्ष इसी के शासनकाल में आरम्भ हुआ। उस समय के शासकों की यह मान्यता थी कि जो कन्नौज का शासक होगा, उसे सम्पूर्ण उत्तरी भारत के सम्राट के रूप में स्वीकार कर लिया जाएगा। कन्नौज पर नियंत्रण का अर्थ यह भी था कि उस शासक का ऊपरी गंगा घाटी और उसके विशाल प्राकृतिक साधनों पर भी नियंत्रण हो जाएगा। पहले प्रतिहार शासक ~~का~~ वत्सराज ने चक्रपाल को पराजित कर कन्नौज पर अधिकार प्राप्त कर रहा था, ~~इसने~~ उसने उत्तरी

भारत पर धावा बोल दिया। काफी तैयारियों के बाद उसने नर्मदा पार कर आधुनिक झाँसी के निकट वत्सराज को युद्ध में पराजित किया। इसके बाद उसने आगे बढ़कर गंगा घाटी में धर्मपाल को हराया। इन विजयों के बाद यह राष्ट्रकूट सम्राट 790 में दक्षिण लौट आया। ऐसा लगता है कि कन्नौज पर अधिकार प्राप्त करने की इसकी कोई विशेष इच्छा इसने के लिए प्रतिहारों की शक्ति को समाप्त कर देना चाहता था। वह दोनों लड़ाइयों में सफल रहा। वह अपनी हार से शीघ्र उठ खड़ा हुआ और उसने अपने एक व्यक्ति को कन्नौज के सिंहासन पर बैठ दिया। यहाँ उसने एक विशाल दरबार का आयोजन किया। जिसमें आस-पड़ोस के क्षेत्रों के कई छोटे राजाओं ने भाग लिया। इनमें गांधार, मद्र, पूर्वी राजस्थान तथा मालवा के राजा शामिल थे। इस प्रकार धर्मपाल को सच्चे ~~सामर्थ्य~~ ~~का इससे बड़ा~~ अर्थों में उत्तरपथस्वामिन कहा जा सकता है। प्रतिहार साम्राज्य को इससे बड़ा धक्का लगा और राष्ट्रकूटों द्वारा पराजित होने के बाद वत्सराज का नाम भी नहीं सुना जाता। इन तीनों साम्राज्यों के बीच करीब 200 साल तक आपसी संघर्ष चला। एक बार फिर कन्नौज के प्रभुत्व के लिए धर्मपाल को प्रतिहार सम्राट नागभट्ट द्वितीय से युद्ध करना पड़ा। ग्वालियर के निकट एक अभिलेख मिला है, जो नागभट्ट की मृत्यु के 50 वर्षों बाद लिखा गया है और जिसमें उसकी विजय की चर्चा की गई है।

इसमें बताया गया है कि नागभट्ट द्वितीय ने मालवा तथा मध्य भारत के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त की तथा तुरुष्कु तथा सैन्धव को पराजित किया जो शायद सिंध में अरब शासक और उनके तुर्की सिपाही थे। उसने बंग सम्राट को जो शायद धर्मपाल था, पराजित किया और शत्रुकूट बीच में आ गए।

धर्मपाल के पुत्र देवपाल ने जो ई०पू० में सिंहासन पर बैठा और 40 वर्षों तक राज्य किया, प्रागज्योतिषपुर तथा उड़ीसा के कुछ क्षेत्रों में अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। नेपाल के कुछ हिस्सा भी पाल सम्राटों के अधीन था। देवपाल की मृत्यु के बाद पाल साम्राज्य का विघटन हो गया। पर इसकी शताब्दी के अंत में यह फिर से उठ खड़ा हुआ और तेरहवीं शताब्दी तक इसका प्रभाव कायम रहा।